A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अष्टछाप भक्त कवि और उनके द्वारा रचित पदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Ras Bihari Das[1], Muskan Sharma[2]

1 Assistant Professor, Department of Performng Arts, Banasthali Vidyapeeth, Rajasthan
2 Research Scholar, Department of Performng Arts, Banasthali Vidyapeeth, Rajasthan

सारांश

पुष्टिमार्ग के सम्माननीय महाप्रभु वल्लाभाचार्य की भक्ति पध्दति को भक्तिकाल के जिन प्रमुख आठ कवियों ने अपनी काव्य प्रतिभा से परिपुष्ट किया था, उन्हे अष्टछाप व अष्टसखा के नाम से जाना जाता है। उन आठ कवियों के नाम इन प्रकार है : सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, कृष्णदास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविंद स्वमी व छीत स्वामि। इनमे से प्रथम चार श्री मद् वल्लभाचार्य के तथा बाकी चार गोस्वामि विठ्ठलनाथ जी के शिष्य थे।

***मुख्य शब्द-** अष्टछाप, श्रीनाथजी, भक्ति संगीत, अष्टयाम, पद, भाव*

भूमिका

कृष्णभक्ति शाखा के ये आठों कवि परमभ्क्त होने के साथ-साथ काव्य-मर्मज्ञ और पद गायक थे। ये सभी ब्रज क्षेत्र के गोवर्ध्दन पर्वत पर स्थित श्री नाथजी के मंदिर में कीर्तन सेवा करते हुए पद रचते व श्री नाथ जी की आठो प्रहर की सेवा मे जैसे मंगला, श्रृंगार, ग्वाल-बाल, राजभोग, उत्थापन, संध्यार्ति, शयन और वर्षोत्सव कीर्तन जैसे जन्माष्टमी, नन्दमहोत्सव, छठी, राधाष्टमी, होली आदि मे अपने पद प्रस्तुत करते थे उनके पदों में वात्सल्य, सख्य, माधुर्य, दास्य आदि भावों की झलक देखने के मिलती हैं। उतर भारत में सगुण भक्ति को प्रतिष्टित करने में इन कवियों का अवदान अविस्मरणिय हैं। लौकिक एवं अलौकिक दोनों दृष्टियों से इनके रचनाएँ विशिष्ट हैं।

अष्टछाप के कवियों ने भगवान श्रीकृष्ण की ललित लीलाओं के कीर्तन में विभिन्न प्रकार की पदों की रचना की, भक्ति साहित्य व ब्रजभाषा को भी सुगढ़ साहित्यिक भाषा का रुप दिया। गोस्वामिजी द्वारा अष्टछाप सेवा के लिए इन आठ भक्त कवियों की अधिमान्यता एवं आशिर्वाद की छाप के कारण ये 'अष्टछाप' के नाम से जाने जाते हैं। भावात्मक लीला की दृष्टि से श्री नाथजी के बालसखा माने जाते है इसलिये ये 'अष्टसखी' के रुप में भी विख्यात हुए। इसी प्रकार 'मधुरभाव' सिध्द कर लेने के कारण 'गोपी भाव' की भक्ति के अन्तर्गत निकुंज लीला की 'अष्टसखी' के रुप भी ये कवि जाने जाते हैं। साहित्य में उपलब्ध विवरणों के आधार पर अष्टछाप कवियों के सखा और सखी रुपों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता हैं-

अष्टछाप	सखा रुप	सखी रुप
सूरदास	कृष्ण	चम्पकलता
परमानन्ददास	लोक	चन्द्रभागा
कुम्भनदास	अर्जुन	विशाखा
कृष्णदास	ऋषभ	ललिता
नन्ददास	भोज	चन्द्ररेखा
छीत स्वामी	सुबल	पद्मा
गोविन्द स्वामी	श्रीदामा	भामा
चतुर्भुजदास	विशाला	विमला

1. सूरदास : (1535ई.-1638 ई.) पुष्टिमार्गीय संगीत के आधारभूत भक्त कवि एवं संगीतज्ञ सूरदास का नाम अष्टछाप कवियों में एक अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। श्री नाद जी के अष्टसखाओं में सूरदास जी का 'कृष्ण सखा' व 'चम्पकलता सखी' के रुप में माना जाता हैं। भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा को अपने पदों मे प्रस्तुत करने वाले सूरदास का जन्म आगरा मथुरा की सड़क पर स्थिर 'रुनकता' नामक गाँव मे सन् 1535 विक्रमी की वैशाखा सुदी पंचमी को हुआ तथा इनका गोलोक गमन 103 वर्ष की आयु मे विक्रम सम्व्रत 1638 में हुआ। सूर विरचित कृतियों की संख्य पच्चीस मानी जाती हैं। सूर-सागर, सूर-सारावली, साहित्य-लहरी आदि सूरदास जी की प्रमुख कृतियां हैं उन्होने लगभग सवा लाख पदों की

रचना की थी, जिसमे से केवल 5000 पद उपलब्ध है जो 'सूर-सागर' मे संकलित हैं। सूर के पदों में भक्ति वात्सल्य व शृंगार का भाव देखने को मिलता हैं।

राधाकृष्ण के प्रेम के प्रादुर्भाव की कैसी स्वाभाविक परिस्थिति का चित्रण किया है इस पद में-

धेन दुहत अति हि रति बाढ़ी।

एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।

मोहन करते धार चलति पय, मोहनि मुख अति ही छबि बाढ़ी।।

2. परमानंददास : (1550ई.-1640 ई.) अष्टछाप के कवियों में विशिष्ट स्थान के परमानन्ददास जी का जन्म 1550 में कन्नौज जिला फर्रुखाबाद में हुआ। परमानन्ददास जी कला एवं साहित्य के प्रेमी थें। वल्लभदासचार्य जी के सम्पर्क में आकर वे आजीवन श्रीनाथजी के मंदिर मे सेवा की। इनके पदों का सांग्रह 'परमानंद सागर' के नाम से प्रकाशित है जिसमे लगभग दो हजार पद संग्रहीत हैं। 'परमानन्ददास' मे भी परमानन्ददास को सम्प्रदाय में दीक्षित होने से पूर्व ही उच्चकोटि का गायक बताया गया है और उन्होनें ध्रुवपद-धमार शैली को ही अपने गायन में प्रधानता दी। इनकी मृत्यु अनुमनित विक्रम सम्व्रत 1640ई. मे हुयी। इन्होनें विरह का एक पद इतनी भावुकता से सुनाया कि आचार्यजी तीन दिन तक ध्यानावस्थित रहें। प्रस्तुत है उस पद की कुछ पंक्तियाँ-

हरि तेरी लीला की सुधि आवै।

कमल नयन मन मोहिनि मुरति के मन चित्र बनावै।।

मुख मुसुकानि बंक अवलोकन चाल मनोहर भावै।।

एक बार जाहि मिलहि कृपा करि सो कैसे बिसरावे।।

3. कुम्भनदास : (1525ई.-1639ई.) पुष्टिमार्गीय संगीत के अष्टछाप कवियों मे कुम्भनदास जी आयु में सबसे बडे थें। कुम्भनदास जी का जन्म काल लगभग 1525 वि.सं. तथा गुरु शरणगीत 1549 वि.सं. और मृत्युकाल लगभग 1639 वि.सं. माना गया हैं। कुम्भनदास जी भगवत भक्त थें। इन्होनें सर्वप्रथम दीक्षा महाप्रभु वल्लभ जी से ग्रह्ण की थी। ये अष्टछाप के प्रथम चार कवियों में वल्लभाचार्यजी के ये प्रथम शिष्य थे। इनकी गायन कला से प्रसन्न होकर ही वल्लभाचार्य जी ने इनके मंदिर में कीर्तन करने की सेवा प्रदान की। कहा जाता है कि इन्हें एक बार 'अखबर बादशाह' के बुलाने पर इन्हें 'फतेहपुर सीकरी' जाना पड़ा था। वहाँ इनका बड़ा सम्मान हुआ। कुम्भनदास जी ने सूरदास जी से भी लम्बी आयु (113वर्ष) पाई थी क्योकि इनका देहावसान भी सूरदास जी की ही मृत्यु के लगभग हुआ था। कुम्भनदास जी का देहावसान 1639 वि.सं. के आसपास हुआ था।

भींजत कब देखोंगी नैना।

दुलहिन जू की सुरंग चुनरी मोहन कौ उपरैना।।

स्यामा स्याम कदंब तर ठाड़े जनत कियो कछु मैं ना।।

'कुम्भनदान' प्रभु गोवर्धनधर जुरि आई जल सैना।।

4. कृष्णदास : (1552ई.-1631ई.) महाप्रभु वल्लाभाचार्य के शिष्यों में कृष्णदास की प्रसिध्द कवि गायक की अपेक्षा व्यवस्थापक एवं दक्ष प्रबंधक की हैं। इसका जन्म 1552 में गुजरात 'चिलोतरा' नामक गॉव के कुनबी के घर हुआ था। 13 वर्ष की आयु में पिता की करतूत पर घृणा कर इन्होने घर छोड़ दिया था और ब्रज में आकर वल्लाभाचार्य जी की शरण मे आ गए थे। आचार्य जी के बड़े कृपापात्र थे और श्री नाथ जी के मंदिर में मुखिया हो गये थे। श्री नाथ के मंदिर को नवीन रुप प्रदान करने तथा उसे वैभव सम्पन्न करने मे इनका विशिष्ट अवदान था। कृष्णदास जी ने लगभग 250 पदों की रचना की हैं। इन्होने श्री 'राधा-कृष्ण' के प्रेम को लेकर बड़े ही सुन्दर पद गाये हैं। 'युगल नाम चरित्र' नामक एक छोटा सा ग्रन्थ इनकी साहित्य सम्पति हैं। 'भ्रमर गीत' और 'प्रेम तत्व निरुपण' नामक दो ग्रन्थ और इनकी उत्कृष्ट रचनाएँ है। जो पद इनका यहाँ दिया जा रहा हैं। कहा जाता है की इसी पद को गाकर इन्होने अपना शरीर त्याग दिया था।

मो मन गिरधर छबि पे अटक्यौ।

ललित त्रिभंग चाल पै, चलकै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यौ॥

सजन स्याम घन बरन लीन है, फिरि चित अनत न भटक्यौ॥

'कृष्णदास' किये प्रान निछावर, यह तन जग सिर पटक्यौ॥

5. नंददास : (1590ई.-1640ई.) नंददास जी परम भागवत तथा उच्च प्रतिभावन कवि थे। काव्य कला मे विशिष्ट चातुरी के कारण ही ये आलोचक समाज में 'जड़िया' की उपाधि से मण्डित थे। ये विट्ठलनाथ जी के शिष्य ये अष्टछाप आठ कवियां में वय की दृष्टि से नंददास सबसे छोटे इनका न जन्म 1590 में सोरों के निकट रामपुर ग्रथों की रचना की हैं नंददास की रचना वैविध्य यह प्रमाणित करता है कि उन्होने गंभीर शास्त्रानुशीलन किया था। भावपक्ष व कलापक्ष का उत्कर्ष उनकी काव्य-साम्रथ्य को प्रमाणित करता है। परिमार्जित भाषा, संगीत मर्मज्ञता तथा काव्य सौष्ठव उन्हे उच्च कोटि का रचनाकार सिध्द करती हैं। सन् 1640 ई. को मानसी गंगा के तट पर इनका देहावसान हुआ था।इनकी सर्वोतम रचनाएँ- 'रास पंचाध्यायी' एवं भ्रमरगीत हैं। भ्रमरगीत के पद एक पद के कुछ अंश प्रस्तुत है-

सखा सुन श्याम के।

जो उनके गुन नाय, और गुन भये कहाँ ते॥

बीज बेना तरु जमै, मोहि तुम कहो कहाँ ते॥

वा गुन कर परछाँह, री माया दरपन बीच॥

गुनते गुन न्यारे भये, अमर बारि जी कीच॥

सखा सुन श्याम के॥

6. छीतस्वामी: (1515ई.-1642ई.) छीतस्वामी मथुरा के चतुर्वेदी ब्राह्माण थे और आरम्भ में बड़ी उद्दंड प्राकृति के थे। इनके घर मे पंडगिरी और जजमानी होती थी कहा जाता है की ये बीरबल के पुरोहित थे। इनका प्रचलित नाम छीत चौबे था। अपनी यौवनावस्था मे ये चार साथियों के साथ श्री विट्ठलनाथ जी की परीक्षा लेने के लिए एक खोटा रुपया तथा राख से भरा नारियल भेट करने पहुचे परंतु विट्ठलनाथ ने अपनी दिव्य शक्ति से उन्हे चमत्कार कर दिया। छीतस्वामी यह चमत्कार देखकर आश्चार्यचकित रह गए और अपने द्वारा किये गये कर्म प्श्चाताप करने लगे। वे गोस्वामी जी ने इनको शिष्य बना लिया और अष्टछाप मे शामिल कर लिया। इनके द्वारा किर्तन गायन हेतु रचे पदों की संख्या लगभग 200 है जो पदावली में संकलित हैं। गोवर्ध्दन के निकट पूंछरी ग्राम मे इनका देहांत संन् 1642 ई. को हुआ।

प्रितम प्रीति तें बस कीनों।

उर अंतर तें स्वाममनोहर नेंकहु जान न दीनों॥

सहि नहिं सकत बिछुरनों पल भरि भलौ नेम्रु यह लीनों॥

'छीतस्वामी' गिरिधन श्रीविट्ठल भक्ति कृपा रस भीनों॥

7. गोविंद स्वामी: (1505ई.-1585ई.) भरतपुर (राजस्थान) के ऑतरी ग़ॉव मे सन् 1505 ई. को एक सनादय ब्राहमण थे। गोविंद स्वामी आरम्भ से ही भजन-कीर्तन के अनुरागी थे। कहा जाता हैं कि संगीत सम्राट तानसेन ने भी इनसे संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। गोविंद स्वामी जी ने अपनी पत्नी व पुत्रों त्यागकर ब्रज मंड्ल मे बसना स्वीकार किया। वे सुकवि तो थे ही प्रसिध्द संगीतशास्त्री भी थे किसी भक्त द्वारा गोविंद स्वामी रचित पद सुनकर विट्ठलनाथ जी बहुत प्रभावित हुए और इन्हे दीक्षा देकर श्रीनाथजी की कीर्तन सेवा मे लगा दिया। इनके पदों की संख्या 600 लगभग है। 252 पद तो 'गोविंद्स्वामी के पद' कृति मे संकलित है। इन्होने बाल लीला व राधाकृष्ण शृंगार के पद रचे है। सहज एवं मार्मिक आभिव्यक्ति तथा भाव गाम्भीर्य इनके पदों की खासियत हैं। इनका देहावसान गोवर्ध्दन मे सन् 1642 ई. (1585ई.) को हुआ था।

प्रीतम प्रीति ही तै पैये।

जदपि रुप गुन सील सुधरता इन बातनि न रिक्भैये॥

सत कुल जनम जनम करम सुभ लच्छन वेद पुरान पढैये॥

'गोविंद' प्रभु बिन स्नेह सुवा लौं रसना कहौ नचैये॥

8. चतुर्भुजदास : (1597ई.-1652ई.) अष्टछाप के ही पुर्ववर्णित कुम्भंदास जी के सबसे छोटे पुत्र थे। इनका जन्म 1597ई. को जमुनावती ग्राम मे हुआ था। भजन-कीर्तन और भक्ति के संस्कार व प्रेरणा इनके अपने पिता से मिली थी। कुम्भंदास जी ने इन्हें संगीत की शिक्षा प्रदान कर पुष्टि सम्प्रदाय में दीक्षित कराया था। संगीत व कविताओं मे इनकी विशेष रुचि थी। ये श्री नाथजी के ही समक्ष गाया करते थे तथा दूसरे किसी के आगे ये कभी नही गाते थे। ये आजीवन श्रीनाथजी मंदिर मे सेवारत थे। इनकी उपलब्ध कृतियाँ है- 'चतुर्भुज कीर्तन संग्रह' कीर्तनवली और दानलीला। रचनाओं मे भक्ति व शृंगार भाव देखने को मिलता हैं। इनका देवाहसान सन् 1652ई. को हुआ।

नैन कुंरगी रति-रस माते फिरत तरल अनियारे।

नवलकिशोर श्याम घन तन बन पाए हैं नव निधि वारे॥

नाना वरन भए सुख पोषै श्याम सेत रतनारे॥

'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन कृपारँग रँगि रचि रुचिर सँवारे॥

उपसंहार

अष्टछाप कवियों ने भगवन श्रीनाथजी की विभिन्न लीलाओं पर भिन्न प्रकार के पदों की रचना की और संगीत की विविध राग-रागिनियों तथा कृष्ण भक्ति के विभिन्न आयमों को भी दर्शाया। कहा जाता है की अष्टछाप कवियों के अतिरिक्त सम्प्रदाय में लगभग 150 वैष्णव कवियों ने पदों की रचना की है लेकिन अष्टछाप कवियों जैसे सूरदास, परमानंददास, नंददास और गोविंद स्वामी जैसा सामर्थ्य उनमे से किसी भी कवि में देखने को नही मिला। इस ही गुणवक्ता और भक्ति-भाव को देख कर ही श्रीवल्लभ व श्रीविट्ठल जी ने इन को श्री नाथ जी की सेवा के लिये अष्टछाप कवियों मे स्थान दिया था।

संदर्भ ग्रंथ

शर्मा, प्रो. सत्यमान, 1999, पुष्टिमार्गिय मन्दिरों की संगीत परम्परा, नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स।
शर्मा, नीरा, 2004, अष्टछाप संगीत- एक विश्लेषण, निवाई: नवजीवन पब्लिकेशन्स।
माथुर, डॉ. श्रीमति निशि, 2011, अष्टछाप भक्त कवि और पुष्टिमर्गीय सेवा में संगीत, जयपुर: राज पब्लिशिंग हाउस।
गुप्त, डॉ. दीनदयाल, 1970, अष्टछाप और वल्लभ समप्रदाय, प्रयाग: प्रकाशक मौलिचनद्र शर्मा।
सरोज, एच. भिष्मपाल, 2004, अष्ट छाप संगीत- एक विश्लेषण, निवाई: सामयिक प्रकाशन।
झारी, डॉ. कृष्णदेव, 1976, अष्टछाप और परमानन्ददास, नई दिल्ली: प्रकाशक शारदा प्रकाशन।
ओझा, डॉ. धर्मनारायण, 1973, सूरदास में पुष्टिमार्गिय सेवा भावना, इलाहबाद: शोध साहित्य प्रकाशन।